दैनिक उद्योग आस–पास, 25 अगस्त, 2017

बिट्स पिलानी पुस्तकालय में जीडी बिड़ला दुर्लभ पुस्तक संग्रह का उद्घाटन समारोह

पिलानी। बिट्स पिलानी लाइब्रेरी में जीडी बिड़ला दुर्लभ पुस्तक संग्रह के पुनर्निर्मित और वातानुकूलित अनुभाग का उद्घाटन समारोह बिट्स पिलानी कुलपति प्रो. सौविक भट्टाचार्य और निदेशक पिलानी परिसर प्रोफेसर एके सरकार की उपस्थिति में बुधवार शाम को किया गया।इस समारोह में वरिष्ठ संकाय सदस्य, अनुसंधान विद्वान, छात्र और संस्थान के कर्मचारी उपस्थित थे। इस नए सुसज्जित जीडी बिड़ला दुर्लभ पुस्तक संग्रहालय में प्रतिष्ठित विद्वानों की दुर्लभ पुस्तकें, पांडूलिपियां, पेंटिंग और तस्वीरों का उल्लेखनीय संग्रह है, जो कालातीत और बहुमूल्य हैं। इनमें से कई दुर्लभ पुस्तकें लगभग 150 और 200 साल पहले प्रकाशित की गईहै।इस संग्रह में ऐसी बहुमूल्य दुर्लभ किताबें शामिल हैं। जैसे पंच विम्ती साहसिका प्रज्ञापोरमिता जो कि भोग भाषा में है, श्री केसी कुलिश द्वारा लिखित शब्द वेद जिसमें चारों वेदों की 11 संहिताओं का वर्णन है। डॉ. सुकराहो की पेंटिंग, हेनरी फ्रेडरिक कोन्राड सेंडर द्वारा सचित्र और वर्णित रोसनबसिया, एडवॉड फिट्ज गेराल्ड द्वारा अनुवादित उमर खय्याम के रूबायत, अर्थव वेद–विलियम डिवाइट व्हाटिनी, मानव विवाह का इतिहास–एड्वार्ड वैस्टर् मार्क, वाल्मिकी रचित समायण–महान महाकाव्य रघु वीर, रामायण चाईना–रघुवीर और चिकियो यामामोटो, कालीदास रचित शकुंतला, अजंता याजदनी के प्लेटस, वीर विनोद के चार ग्रंथ, मेवाड़ का इतिहास–श्यामलाल दास, बाराबुदुर–हग्यु, मार्टिस निजॉफ, मोहनजोदाड़ो और सिंधु सभ्यता आदि पुस्तकें। बिट्स पिलानी विश्वविद्यालय के गठन के समय बिट्स पिलानी के संस्थापक जीडी बिड़ला ने विख्यात विद्वानों की दुर्लभ पुस्तकों का दान किया था। नेशनल डिजीटल लाइब्रेरी परियोजना के हिस्से के रूप में लगभग पांच हजार पुस्तकों को भारत सरकार द्वारा डिजीटाइज किया गया। अधिक पुरानी और जलवायु परिस्थितियों के कारण इन पुस्तकों के पृष्ठ भंगुर और पुस्तकों की बाइंडिंग बंद होना आदि कारणों को ध्यान में रखते हुए और शैक्षिक, शोध और भावी पीढ़ी के लिए इस संग्रह को संरक्षित करने के लिए लाइब्रेरियन और पब्लिकेशंस और मीडिया रिलेशंस यूनिट के प्रमुख गिरिधर कुन्कुर की देखरेख में लाइब्रेरी ने पिछले साल नेशनल आर्काइव, नई दिल्ली के साथ मिलकर दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण पर तीन दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया था। जिसमें दुर्लभ पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए एक विशेष जर्मन टिशू पेपर की खरीद की गई थी। पुस्तकालय में पुस्तक संरक्षण प्रयोगशाला भी स्थापित की गई जिसमें जर्मन टिशू पेपर का उपयोग कर बिट्स पिलानी लाइब्रेरी स्टाफ द्वारा संरक्षित कुछ दुर्लभ किताबें भगवद्गीता–डीएस शर्मा, बौद्ध विश्वविद्यालयों के भारतीय शिक्षक–फन्निंद्रनाथ बोस, आधुनिक दर्शनशास्त्र के विचार–जोर्ज संत्याना आदि पुस्तकों को इस तकनीक का उपयोग कर 25 से अधिक मूल्यवान और विद्वानों की पुस्तकों को संरक्षित किया गया है और यह काम प्रगति पर है। मौसम, धूल तूफान और चरम गर्मी की स्थिति से पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए, बिट्स पुस्तकालय ने सिद्धार्थ बर्नजी आदित्य बिरला ग्रुप के प्रसिडेंट और हैड इंफ्रास्टक्चर प्रोजक्ट के दिशा निर्देशन में तैयार जिप्सम विभाजन वाले बोर्डों का उपयोग करके एक अलग वातानुकूलित अनुभाग का निर्माण किया गया। जिससे इन दुर्लभ पुस्तकों के लिए उपयुक्त तापमान बनाए रख उन्हें संरक्षित किया जा सके। ताकि इस संग्रह का उपयोग अनुसंधान और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए किया जा सके।

दैनिक नवज्योति, 25 अगस्त, 2017

जीडी बिड़ला दुर्लभ पुस्तक संग्रह का उद्घाटन

न्यूज सर्विस/नवज्योति, पिलानी

बिट्स पिलानी लाइब्रेरी में जीडी बिड़ला दुर्लभ पुस्तक संग्रह के पुनर्निर्मित और वातानुकूलित अनुभाग का उद्घाटन समारोह बिट्स पिलानी कुलपति प्रोफेसर सौविक भट्टाचार्य और निदेशक पिलानी परिसर प्रोफेसर ए.के. सरकार की उपस्थिति में बुधवार को आयोजित किया गया। इस समारोह में वरिष्ठ संकाय सदस्य, अनुसंधान विद्वान, छात्र और संस्थान के कर्मचारी उपस्थित थे। इस नये सुसज्जित जीडी बिड़ला दुर्लभ पुस्तक संग्रहालय में प्रतिष्ठित विद्वानों की दुर्लभ पुस्तकें, पांडुलिपियां, पेंटिंग और तस्वीरों का उल्लेखनीय संग्रह है, जो कालातीत और बहुमूल्य हैं। इनमें से कई दुर्लभ पुस्तकें लगभग 150 और 200 साल

पहले प्रकाशित कि गयी हैं। बिट्स पिलानी विश्वविद्यालय के गठन के समय बिट्स पिलानी के संस्थापक जीडी बिड़ला ने विख्यात विद्वानों की दुर्लभ पुस्तकों का दान किया था। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी परियोजना के हिस्से के रूप में लगभग 5000 पुस्तकों को भारत सरकार द्वारा डिजीटाइज किया गया। मौसम, धूल तूफान और चरम गर्मी की स्थिति से पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए, बिट्स पुस्तकालय ने सिद्धांथ बर्नजी आदित्य बिरला ग्रुप के प्रसिडेन्ट और हैड इंफ्रास्टक्चर प्रोजक्ट के दिशा निर्देशन में तैयार जिप्सम विभाजन वाले बोर्डों का उपयोग करके एक अलग वातानुकूलित अनुभाग का निर्माण किया गया। जिससे इन दुर्लभ पुस्तकों के लिए उपयुक्त तापमान बनाए रख उन्हें संरक्षित किया जा सके ताकि इस संग्रह का उपयोग अनुसंधान और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए किया जा सके।

राजस्थान पत्रिका, 25 अगस्त, 2017

बिट्स में दुर्लभ पुस्तक संग्रह का उद्घाटन

पिलानी. बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी एण्ड साइंस (बिट्स) में दुर्लभ पुस्तक संग्रह का उद्घाटन बुधवार की देर शाम को किया गया। संस्थान के पुस्तकालय में नव निर्मित दुर्लभ संग्रह केन्द्र का नाम जीडी बिरला दुर्लभ पुस्तक संग्रह रखा गया है। समारोह के अतिथि बिट्स कुलपति प्रो. सौविक भट्टाचार्य एवं निदेशक डा. एके सरकार थे। अतिथियों

ने उद्घाटन करते हुए दुर्लभ सहित्य की वर्तमान में उपयोगिता बताई। इससे पहले बिट्स लाईब्रेरियन गिरिधर एम. कुंकर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए नवनिर्मित संग्रह से जुड़ी जानकारी दी। कार्यक्रम में संस्थान के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

दैनिक भास्कर, 25 अगस्त, 2017

जीडी बिरला दुर्लभ पुस्तक संग्रहालय का उद्घाटन

पिलानी | बिट्स लाइब्रेरी में जीडी बिरला दुर्लभ पुस्तक संग्रह अनुभाग का उदघाटन हुआ। बिट्स वीसी प्रो. सौविक भटटाचार्य व निदेशक प्रो. अशोक कुमार सरकार ने पुनर्निर्मित व वातानुकूलित अनुभाग का उदघाटन किया। लाइब्रेरियन गिरिधर कुनकुर ने बताया कि इस विभाग में अनेक दुर्लभ पुस्तकों को रखा गया है। इनमें विशेषकर बिट्स के स्थापना के समय संस्थापक जीडी बिरला द्वारा दान की गई विख्यात विद्वानों की दुर्लभ पुस्तकें प्रमुख हैं। इसके अलावा पंचविंसती साहसिका प्रज्ञापोरमिता, केसी कुलिश की शब्द वेद, डॉ. सुकराहो की पेंटिग, हेनरी फ्रेडरिक कोनार्ड सेंडर की सचित्र व वर्णित रोसनबसिया, एडवर्ड फिट्ज गेराल्ड की अनूदित उमर ख्याम की रुबाइयां, विलियम डिवाइट व्हाटीनी की अथर्ववेद सहित अनेक दुर्लभ पुस्तकें रखी गई हैं।

उन्होंने बताया कि यहां पुस्तक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित की गई है, जिसमें जर्मन टिशू पेपर का उपयोग कर कई दुर्लभ पुस्तकों का संरक्षण किया गया है। इनमें डीएस शर्मा की भगवद् गीता, बौद्ध विश्वविद्यालयों के भारतीय शिक्षक फनीन्द्रनाथ बोस, जोर्ज संत्याना की आधुनिक दर्शन शास्त्र के विचार सहित अन्य 25 से अधिक दुर्लभ पुस्तकें शामिल हैं। मौसम, धूल व गर्मी की स्थिति से पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए आदित्य बिरला ग्रुप के प्रेसीडेंट व हैड इंफ्रास्टक्चर सिद्धार्थ बनर्जी के निर्देशन में तैयार बोर्ड का उपयोग कर अलग वातानुकूलित अनुभाग का निर्माण किया गया है।